REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

कृषि में तकनीकी विकास से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के बढ़ते अवसर – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

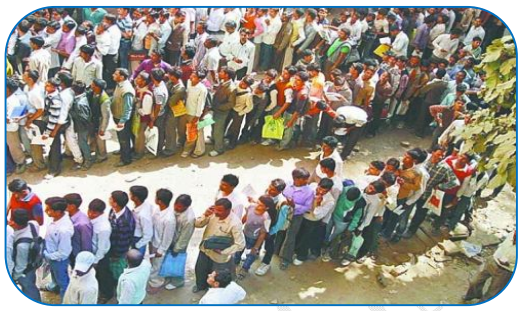

डॉ. विजय कुमार सिंह
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल विभाग)
अटल बिहारी बाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल.

प्रस्तावना :

भारत कृषि प्रधान देश है इसकी दो–तिहाई जनसंख्या अभी भी कृषि पर अपनी जीविका हेतु निर्भर करती है इसके बावजूद स्वतंत्रता प्राप्ति के दो दशकों के उपरान्त कृषि हरित क्रांति के फलस्वरूप खाद्यान्न समस्याओं से बाहर निकल पायी। देश की आबादी जैसे–जैसे बढ़ती गई वैसे–वैसे कृषि क्षेत्र का आकार भी बढ़ता गया, किंतु जनसंख्या के अनुपात में इतनी वृद्धि नहीं हुई जितनी की अपेक्षित थी। इसके विपरीत प्रति व्यक्ति जोत आकार छोटा होता गया, इन छोटे आकार वाले जोत से आधुनिक कृषि उपकरणों द्वारा कृषि विकास में गत्यात्मक परिवर्तन लाना अपने आप में कठिन कार्य था। स्वाभाविक है कि इन विषम परिस्थितियों में ग्रामीण बेरोजगारी बढ़ती गयी और रोजगार हेतु लोगों को शहर की ओर पलायन करने को मजबूर होना पड़ा लेकिन शहरी क्षेत्रों में भी वे गन्दी बस्तियों का हिस्सा बनकर रह गये, जिन्हें न तो अच्छा रोजगार मिल पाया और न ही वे अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठा पाए। किंन्तु हरित क्रान्ति के परिणाम स्वरूप एवं विगत चार दशकों में कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। कृषि एवं उससे सम्बद्ध क्षेत्रकों में कृषि तकनीकी विकास के फलस्वरूप किसानों की आय वृद्धि में न केवल मदद मिली है बल्कि रोजगार के नए नए अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं। देश के विकास और प्रगति में कृषि एवं उससे सम्बन्धित अन्य कृषि क्रियाकलापों से रोजगार के अवसर ढूंढने में महत्वपूर्ण योगदान मिल रहा है। यह विदित है कि देश का आर्थिक और सामाजिक ढाँचा आज भी इसी कृषि विकास के ताने–बाने पर टिका हुआ है। कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला हैं, यह न केवल देश की दो तिहाई आबादी की रोजी रोटी एवं आजीविका का प्रमुख साधन है बल्कि नए नए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की ओर अग्रसर है। देश में खेती–बाड़ी के साथ–साथ पशुपालन, बागवानी, मुर्गी पालन, मछली पालन, वाणी की रेशम कीट पालन, कुक्कुट पालन, बत्तख पालन, आमदनी बढ़ाने एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में एक अहम हिस्सा बनता जा रहा है। देश की राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों से प्राप्त होता है। देश के कुल निर्यात में १६ प्रतिशत हिस्सा कृषि से प्राप्त होता है। आज भी देश की लगभग आधी श्रम शक्ति कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में ही लगी हुई है। आर्थिक सर्वेक्षण २०१८–१९ में देश की आर्थिक वृद्धि दर ७ से ७.५ प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है। कृषि सम्बन्धी आँकड़ों का अवलोकन करें तो कृषि विकास दर २०१६–१७ में ४.९ प्रतिशत थी एवं देश के सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) में इसकी हिस्सेदारी १७.८ प्रतिशत रही है। किसी समय आयात पर निर्भर रहने वाला भारत २८ करोड़ टन खाद्यान्नों का उत्पादन कर रहा है। आज भारत गेहूँ, धान, दलहन, गन्ना और कपास जैसी अनेक फसलों के उत्पादन में अग्रणी बना हुआ है, सब्जी और फल उत्पादन के क्षेत्र में भारत द्वितीय स्थान पर है देश में २.३७ करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र में बागवानी फसलों की खेती की जाती है जिससे वर्ष २०१६–१७ में ३०.५ करोड़ टन बागवानी फसलों का उत्पादन किया। भारत मसालों के उत्पादन एवं निर्यातक के क्षेत्र में विश्व में प्रथम स्थान पर

बना हुआ है। भारत १६.५ करोड़ टन दुग्ध उत्पादन के साथ विश्व को १९ प्रतिशत का योगदान दे रहा है। कुक्कुट पालन में भारत का विश्व में सातवां स्थान है, अंडा उत्पादन में चीन और अमेरिका के बाद भारत विश्व में तृतीय स्थान रखता है, मत्स्य उत्पादन में विश्व में द्वितीय स्थान पर है।

उपर्युक्त कृषि के वास्तविक स्वरूप का अवलोकन करने से यह स्पष्ट हो रहा है कि पिछले चार दशकों में कृषि विकास के राजमार्ग पर तीव्र गति से आगे बढ़ी है किंतु भारत में आज भी कृषि किसानों का जोखिम भरा व्यवसाय है जिसमें सालाना आमदनी मौसम पर निर्भर करती है। खेती में बढ़ती हुई उत्पादन लागत एवं घटते लाभ के कारण युवा कृषि की ओर से विमुख होता जा रहा है। कृषि योग्य भूमि की कमी एवं कम आमदनी की वजह से रोजगार के अवसर जितने होने चाहिए उतने अभी भी नहीं है। अत: कृषि आधारित व्यवसाय में तकनीकी एवं मूल्य सम्वर्धित कार्यो को रोजगार के विकल्प के रूप में अपनाया जा सकता है।

कृषि एवं रोजगार

भारत की १.३० अरब जनसंख्या में ९० करोड़ जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है जिसमें ३० करोड़ के लगभग लोग अशिक्षित हैं जिसका ८५ प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है। आज भी किसान परम्परागत तरीके से कृषि कार्य को सम्पादित करते हैं अत: इस बात की महती आवश्यकता है कि तकनीकी आधारित कृषि शिक्षा देकर आधुनिक कृषि प्रणाली एवं उन्नतशील कृषि पद्धति को ढूँढना होगा जिससे कृषकों के ज्ञान और आय में वृद्धि हो तथा रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकें। वैश्विक आर्थिक उदारीकरण का सर्वाधिक प्रभाव कृषि पर पड़ा है तथा गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के प्रतिशत में वृद्धि हुई है। आर्थिक उदारीकरण के पूर्व यह प्रतिशत २८ था जो वर्तमान में बढ़कर ४० प्रतिशत तक पहुँच गया है। यह सत्य है कि कृषि उत्पादन के नए—नए प्रतिमान स्थापित किए जा रहे हैं फिर भी देश में बेरोजगारी और भुखमरी में वृद्धि देखी जा रही है। यह देश के लिए सबसे बड़ी चुनौती के रूप में सामने आ रही है। आज ग्रामीण क्षेत्रों का बेरोजगार व्यक्ति काम की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने पर विवश है, ऐसी दशा में अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि ग्रामीण बेरोजगारों को कृषि आधारित स्व रोजगार की ओर उन्मुख किया जा सके जिससे ग्रामीण प्रतिभाओं का शहरों की ओर पलायन रुक सके। सन २०१८ में विश्वव्यापी रोजगार में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी ४० प्रतिशत हो गई है। इस तरह पहली बार खेतिहर रोजगार की हिस्सेदारी को सेवा क्षेत्र ने पीछे छोड़ दिया है। ऐसी दशा में यह आवश्यक हो जाता है कि कृषि एवं उससे सम्बद्ध रोजगारों को बढ़ावा दिया जाए।

फल सब्जी एवं रोजगार

अत: भारत में आवश्यकता इस बात की है कि फलों एवं सब्जियों का सही संरक्षण एवं वैज्ञानिक प्रसंस्करण करके उसे देशज और विदेश बाजारों में बेचकर ग्रामीण बेरोजगार घर बैठे रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। विश्व बाजार में फलों की माँग अधिक है, जिसके द्वारा देश के लिए जरूरी विदेशी मुद्रा ही नहीं कमाई जा सकती बल्कि रोजगार के नए अवसर भी पैदा किए जा सकते हैं। इस कार्य के लिए समूह एवं स्वयं सहायता समूह बनाकर कार्य किया जाए तो इससे बैंक भी आर्थिक मद्द प्रदान करने की स्थिति में होता है।

पशुपालन एवं रोजगार

पशुपालन एवं डेयरी उद्योग भारतीय कृषि का अभिन्न अंग है। भूमिहीन श्रमिकों, छोटे किसानों एवं बेरोजगार ग्रामीण युवाओं के लिए पशुपालन एक लाभ का व्यवसाय हो सकता है। भारतीय कृषि में खेती और पशुपालन किस स्तर तक सम्बन्धित हैं, को पृथक कर पाना एक कल्पना मात्र ही थी लेकिन आज के मशीनीकृत युग में इस कल्पना को भी एक साकार रूप मिलने लगा है। यदि इसे रोजगार की दृष्टि से देखें तो कृषि और पशुपालन एक दूसरे के अनुपूरक व्यवसाय ही हैं, जिसमें कृषि की लागत का एक हिस्सा तो पशुओं से प्राप्त हो जाता है तथा पशुओं का चारा आदि फसलों से मिल जाता है। इस प्रकार खेती की लागत बचने के साथ—साथ पशुओं से दुग्ध भी प्राप्त हो जाता है, जिस पर सम्पूर्ण डेयरी

उद्योग टिका हुआ है, जिसमें दूध और उससे सम्बन्धित उत्पादों का निर्माण और परिरक्षण तथा उनकी पैकेजिंग के अतिरिक्त बनने वाले विभिन्न उत्पादों जैसे दूध का पाउडर, दही, मक्खन, पनीर आदि के निर्माण एवं विपणन में संलग्न छोटी इकाईयों से लेकर अनेक राज्यों के दुग्ध संघ एवं राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड जैसे संस्थानों द्वारा हजारों, लाखों लोगों को रोजगार प्राप्त हो रहा है। पशुपालन के विस्तार से रोजगार के अवसर बढ़ने की प्रबल संभावनाएं हैं। पशुओं से प्राप्त दुग्ध एवं उनके गोबर से प्राप्त गोबर गैस को भी हम विभिन्न कार्यों के लिए उपयोग में ला सकते हैं इसके अतिरिक्त पशुओं के बाल, मांस, चमड़े एवं हड्डियों पर आधारित उद्योगों द्वारा रोजगार बढ़ाने की प्रबल संभावनाएं हैं। पशुपालन एवं डेयरी उद्योग में वैज्ञानिक जानकारी एवं अल्पकालीन प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल हरियाणा, केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार हरियाणा, राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केंद्र बीकानेर राजस्थान, राष्ट्रीय माँस अनुसंधान केंद्र हैदराबाद, राष्ट्रीय पशु परियोजना निदेशालय हैदराबाद एवं मेरठ से इस विषय पर संपर्क किया जा सकता है।

कुक्कुट एवं मधुमक्खी पालन में रोजगार के अवसर

चिकन, मांस, एवं अण्डों की उपलब्धता के लिए व्यावसायिक स्तर पर मुर्गी और बत्तख पालन को कुक्कुट पालन कहा जाता है। भारत में विश्व की सबसे बड़ी कुक्कुट आबादी है, जिसमें अधिकांश छोटे सीमांत एवं मध्यम वर्ग के किसानों के पास है, इन्हीं भूमिहीन किसानों के लिए मुर्गी पालन रोजी रोटी का मुख्य आधार है एवं किसानों की आय में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में इस उद्योग से अनेक फायदे हैं इससे न केवल किसानों की आय में वृद्धि होती है बल्कि निर्यात से सकल घरेलू उत्पाद में भी मुख्य भूमिका रहती है। कुक्कुट पालन पौष्टिक आहार की पूर्ति करने में काफी सहायक हो रहा है। मुर्गी पालन देश में बेरोजगारी घटाने के साथ पौष्टिकता बढ़ाने का बेहतर साधन है।

भेड़–बकरी पालन से जुड़े रोजगार

ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले बहुत से ऐसे भी लोग हैं जिनके पास कृषि के लिए भूमि नहीं है जो अपनी आजीविका चलाने के लिए मजदूरी या अन्य क्रियाकलाप करते हैं ऐसे भूमिहीन ग्रामीणों के लिए भेड़ और बकरी का पालना एक अच्छा व्यवसाय साबित हो सकता है। इस व्यवसाय को प्रारंभ करने के लिए बहुत कम पूँजी की आवश्यकता पड़ती है। इनसे प्राप्त होने वाले ऊन, मांस तथा चमड़े का उपयोग उद्योगों में कच्चे माल के रूप में होता है। विदेशों में अच्छी किस्म की साल, कंबल एवं ऊनी वस्त्र बनाने के लिए उनकी व्यापक पैमाने पर माँग है जिनमें भारतीय मेरिनो ऊन दुनिया में प्रसिद्ध है, साथ ही साथ चमड़े की जैकेट, हाथ के दस्ताने, जूते और टोपियाँ बनाने में उपयोग किया जाता है, इसलिए भेड़ और बकरियों का पालन अधिक लाभ का व्यवसाय बन गया है। परम्परागत तरीकों की जगह यदि वैज्ञानिक तरीके से इनका पालन पोषण किया जाये तो इससे और अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

बागवानी कृषि से जुड़े हुए रोजगार

भारतीय जलवायु की विविधता यहॉ की मृदा एवं वनस्पति का निर्धारण करती है, जिस कारण यहॉ फलों और सब्जियों की खेती के साथ–साथ फूलों तथा बागवानी से जुड़ी अन्य गतिविधियों का संपादन मुनाफे का सौदा हो सकता है। केला, नींबू ,करौंदा आज खेत की मेड़ों पर पैदा किए जाते है, जिससे कम जगह में अधिक रोजगार पैदा होता है। दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली इन कृषि उपजों की लागत की अपेक्षा आमदनी अधिक है। इन पौधों के रोपण, निराई, गुड़ाई, कटाई, छॅटाई तथा इनके उत्पादों को संग्रह करने से लेकर इनके प्रसंस्करण, पैकेजिंग तथा विपणन आदि में कुशल और अकुशल दोनों प्रकार के श्रमिकों की आवश्यकता होती हैं। इसलिए बागवानी क्षेत्र में रोजगार उत्पादन की प्रबल क्षमता है।

कुटीर उद्योग से जुड़े रोजगार

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर आधारित कुटीर उद्योग रोजगार उत्पादन का विस्तृत प्लेटफॉर्म तैयार करता है जिसकी सहायता से आमदनी और जीवन स्तर दोनों को ऊँचा उठाया जा सकता ह। इन उद्योगों में आटा मिल, दाल मिल, तेल मिल, चावल मिल की स्थापना के द्वारा नवीन रोजगारों का सृजन किया जा सकता है। गेहूं से सूजी बनाना, मैदा बनाना, ब्रेड बनाना जैसे कार्यो को कुटीर उद्योग के रूप में आसानी से सम्पादित किया जा सकता है। बॉस, अरहर, जूट, पटसन तथा फसलों के डंठल और पौधों की पत्तियों द्वारा टोकरी, पंखा, चटाई, टोपिया, तरह–तरह के खिलौने और दोना पत्तल आदि बनाकर अपनी आमदनी को बेहतर किया जा सकता और इस काम में बहुत से लोगों को समायोजित किया जा सकता है। कुर्सी, मेज खिड़की, दरवाजे तथा विभिन्न प्रकार के काष्ठ उपकरण या जीवन उपयोगी चीजों का निर्माण कुटीर उद्योगों के अन्तर्गत किया जाता है। वास्तव में देखा जाये तो कृषि के प्रत्येक उत्पाद में रोजगार सृजन करने की क्षमता हैं।

सुझाव

कृषि एक प्रारंभिक जीविकोपार्जन का साधन सदैव से रहा है भारत जैसे विकासशील देश में जहॉ पर ७० प्रतिशत से ज्यादा लोग कृषि पर आश्रित हैं, उन्हें अपने जीविकोपार्जन के लिए कृषि एवं कृषि से सम्बद्ध अन्य क्रियाकलापों से उतने लाभ की प्राप्ति नहीं कर पाते हैं जितना कि विकसित देशों की कृषक प्राप्त कर रहे हैं। भारत की आजादी के पूर्व अंग्रेजों ने भारत में कृषि को एक व्यवसाय के रूप में शुरु किया था जो नील, चाय, कॉफी, जूट, कपास की खेती के रूप में प्रारंभ की गई थी और इसका लाभ अंग्रेज पूरी तरह से प्राप्त करते थे। इसके अतिरिक्त भारत के लघु, सीमांत एवं मध्यम कृषक थे उनके लिए कृषि केवल आजीविका का साधन ही बनी रही। स्वतंत्रता के बाद करीब दो दशक तक भारत अपनी खाद्यान्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अमेरिका, रूस जैसे देशों पर निर्भर करता था। सन १९७० के दशक में बंगाल का दुर्भिक्ष और भुखमरी एक महामारी के रूप में देखने को मिली है जिसमें लाखों लोग भोजन के अभाव में दम तोड़ दिये। भारत गरीबी रेखा के सबसे निचले पायदान पर पहुँच गया, ऐसी परिस्थितियों में हरित क्रांति की शुरुआत हुई। इस दिशा में एक कदम प्रगति की ओर चलने में तत्कालीन सरकारों ने कदम बढ़ाया किंतु १९९० के दशक तक आते आते कृषि का एकांकी स्वरूप जो फसल उत्पादन तक ही सीमित रह गया। कृषि विशेषज्ञों एवं अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधानकर्ताओं ने भारत जैसे विकासशील देशों के लिए कृषि के स्वरूप बदलने एवं संपूर्ण पैकेज के रूप में का सुझाव दिया। कृषि विशेषज्ञ एवं अर्थशास्त्रियों का ऐसा मत था कि कृषि एवं पशुपालन के संयुक्त प्रबंधन से न केवल भारत की गरीबी दूर होगी बल्कि यह लाभ के व्यवसाय के रूप में स्थापित हो सकेगा, जो नए–नए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में सक्षम होगा एवं भारत की घरेलू आय वृद्धि होगी और भारत विकसित देश होने की तरफ अग्रसर होगा। भारत में कृषि एवं इससे जुड़े हुए उद्यानिकी, कुक्कुट पालन, मछली पालन, मधुमक्खी पालन, सब्जी उत्पादन, फल उत्पादन, भेड–बकरी पालन एवं कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन से किसान लाभ की स्थिति में भी रहेगा और रोजगार के नए अवसर भी उपलब्ध होंगे। वर्तमान में उत्तम बीज उत्पादन नर्सरी, सुगंधित पौधों की खेती एवं फूलों की खेती से कृषि एक लाभकारी व्यवसाय के रूप में अपने को स्थापित कर रही है।

निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं कि कृषि में उत्पादन, उत्पादकता, फसल चक्र, मिश्रित खेती, जैविक कृषि, जैविक खाद, बायोगैस ,जल संवर्धन एवं प्रसंस्करण इकाईयों के द्वारा कृषि न केवल रोजगार बल्कि एक विकसित एवं सम्मानित व्यवसाय के रूप में अपने आप को स्थापित कर सकेगी।